कामतानाथ के उपन्यास "कालकथा" में दलित चेतना

–डॉ0 अनुश्री त्रिपाठी

राजा एस0पी0 सिंह डिग्री कॉलेज, ग्वालियर रोड, इटौरा, आगरा

सारांश – "काल कथा" कामतानाथ का 916 पृष्ठों में दो खण्डो में प्रकाशित एक वृहद उपन्यास है। यह उपन्यास सन् 1918 से 1928 के उत्तर भारतीय जीवन के विशाल परिवेश को आधार बनाता है। तत्कालीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक, राजनैतिक और सामाजिक परिस्थितियों को दर्शाते हुए लेखक दलित जीवन की विद्वयतम् स्थिति को उजागर करता है। तत्कालीन समाज में व्याप्त स्वतन्त्रता आन्दोलनों का वर्णन करते हुए लेखक दलितों की भूमिका और संघर्ष को दर्शाते हुए उनके जीवन में व्याप्त कठिनाईयों, समस्याओं की पड़ताल करता है।

उपन्यास में कथानक की पृष्ठभूमि के अनुसार अवध प्रान्त की आंचलिक भाषा के सफल प्रयोग द्वारा दलितों के जीवन की सूक्ष्म और वास्तविक चित्रण दर्शनीय है। उपन्यास के सभी पात्र वास्तविक जीवन से जुड़े खांटी पात्र हैं। ये पात्र पाठक को दलित जीवन की दुरहता और मानसिक उद्देलनों से सीधा साक्षात्कार कराते है आज भी बहुत अंशो में छुआछूत, भेदभाव, शोषण, उत्पीड़न और अलगाव जैसी शाश्वत समस्याओं की मार झेलते दलित वर्ग के जीवन की कटुता को दर्शाता यह उपन्यास प्रासंगिक है। दलितों के जीवन की दुरूहता के साथ–साथ दलितोद्वार के प्रयास को भी यह उपन्यास फलीभूत कराता है।

प्रस्तावना – 'कालकथा' कामतानाथ एक वृहद उपन्यास है जो दो खण्डो में प्रकाशित है। यह उपन्यास सन् 1918 से 1929 के उत्तर भारतीय जीवन के विशाल परिवेश को समाहित किये हुए है। पत्रिका 'आजकल' के जून 1999 अंक में प्रदीप उपाध्याय से साक्षात्कार के दौरान स्वयं कामतानाथ कहते हैं– "मेरे अन्य उपन्यासों का कलेवर छोटा है। यह महाकाव्य स्तर का है। इसका फलक बहुत बड़ा है। यह दो चार आदमियों की नहीं एक कालखण्ड – समय विशेष की कथा है। उस समय का जो भी राजनैतिक सामाजिक परिदृश्य था उसे प्रस्तुत करने का यह प्रयास है। "[1] यह उपन्यास आधुनिक भारतीय इतिहास के अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं युग परिवर्तनकारी कालखण्ड की महागाथा है। इसमें दलितों की स्थिति और प्रयास महत्वपूर्ण है।

दलित समुदाय भारत में सर्वाधिक उपेक्षित समुदाय के रूप में जाना जाता है। कुछ घृषित और सेवापरक कार्यों को छोड़कर समाज में उन्हें कोई विषेश भूमिका नहीं मिली। दलित शब्द रूप को व्याख्यायित करते हुए दलित लेखिका डॉ0 नीलिमा शाह लिखती हैं–"दलित शब्द का अर्थ है–दलन–दमन किया गया, उत्पीड़ित, मर्दित, शोषित, उपेक्षित किया गया, दबाया गया, कुचला गया और रौंदा गया आदि।"[2] इसी क्रम में दलित विमर्शकार शरण कुमार लिंबाले दलित शब्द का व्यापक अर्थ ग्रहण करते हैं। उनके अनुसार–"दलित केवल हरिजन और नवबौद्ध नहीं। गॉव की सीमा से बाहर रहने वाली सभी अछूत जातियां, आदिवासी, भूमिहीन, खेत मजदूर, कष्टकारी जनता और यायावर जातियाँ सभी की सभी दलित शब्द की परिभाषा में आती हैं। दलित शब्द की परिभाषा में केवल अछूत जाति का उल्लेख करने से नहीं चलेगा। इसमें आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए लोगों का भी समावेश करना होगा।"[3]

'कालकथा' 916 पृष्ठों का एक ऐसा उपन्यास है जिसमें आधुनिक भारतीय इतिहास का अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं युगप्रवर्तनकारी कालखण्ड समाहित है। इस उपन्यास में अवध प्रान्त के पिछड़े ग्रामीण इलाकों को केन्द्र में रखकर तत्कालीन सामाजिक जीवन व राजनैतिक उथल–पुथल को अत्यंत सूक्ष्मता और जीवंतता के साथ दर्शाया गया है। इसमें मुख्य रूप से दलितों की दयनीय स्थिति और उनके संघर्ष को रेखांकित किया गया है। स्वतंत्रता आंदोलनों की सफलता या असफलता दलितों एवं सर्वहारा वर्ग की विशाल जनसंख्या के योगदान के बिना असम्भव थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता की लड़ाई में दलितों और सर्वहारा वर्ग की बराबर हिस्सेदारी की सुनिश्चित एवं प्रोत्साहति किया था। गाँधी जी दलितों को 'हरिजन' के नाम से सम्बोधित कर छुआछूत और पद दलित की खाई को पाटने का प्रयास किया था। प्रफुल्ल कोलख्यान के अनुसार–"हरिजन की अवधारणा सत्ता की संरचना में बदलाव के लिए संघर्षशील है।"[4]

कालकथा का नायक तेजशंकर गाँधीवादी विचारधारा को मानने वाला नवयुवक है, जो एक क्रांतिकारी की भूमिका का निर्वाह करता है। तेजशंकर दीनदलित जनता के प्रति सहानुभूति से पूरित है। वह दलितों में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर क्रांति की मसाल प्रज्जवलित करता है। 'कालकथा' में एक दलित महिला 'टिकुली' इसका एक अच्छा उदाहरण है–"गाँधी जी बाबा की जय बोलो कौनो भूत–प्रेत भेड़हा लगे न आयी।"[5] टिकुली के चरित्र को परिभाषित करते हुए अनय लिखते

हैं– टिकुली जैसे चरित्र की सृष्टि रचनाकार की व्यापक संवेदना का प्रमाण है। ऐसे चरित्रों की सृष्टि अभिजन संवेदना से ही संभव नहीं है, धरती से जुड़े चरित्रों की सृष्टि जीवन से गहरे लगाव और जुडाव से ही संभव है।"[6] 'टिकुली' उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र है। 'कालकथा' खण्ड 1 में 'टिकुली' के महत्ता का प्रदर्शित करता एक उदाहरण यहां दृष्टव्य है– "दुर्जन खेड़ा की टिकुली को असहोयोग आंदोलन के जमीनी कार्यकर्ता तेजशंकर से जो सम्मान और बल मिलता है, उसे नई ताकत और चेतना के बल पर वह मदारी पासी की सभा के बाद अपने गाँव में उत्पीड़न का शिकार हुए अपने परिवार जनों के लिए ही नहीं पूरे गाँव और देश के लिए मसाल बनकर जागृत हो उठती है।"[7] स्पष्ट है कि टिकुली देश की दलित और उत्पीड़ित जनता का प्रतिनिधित्व करती है। परमानंद श्रीवास्तव लिखते हैं– राजनीतिक शक्तियाँ जो इतिहास बना रही हैं वही महत्वपूर्ण नहीं है साधारण लोग सामान्यजन छात्र, स्त्रियाँ, दलित और दूसरे लोग संघर्ष के समूचे परिदृश्य में हस्तक्षेप कर रहे हैं। उसका अपना इतिहास है। कभी त्रासद और विक्षोभकारक भी।"[8] कथा का नायक तेजशंकर तत्कालीन समाज में फैली कुरितियों और कुप्रथाओं का विरोध कर समाज में प्रगतिशील विचार धारा का संवाहक बनता है। दलितों की बस्ती दुर्जनखेड़ा में सबके साथ बैठकर भोजन करता है और लोगों के आपत्ति करने पर कहता है–"छूत–अछूत कुछ नहीं होता भाई यह सब तो मनुष्य के बनाये नियम हैं। भगवान ने किसी में कोई भेद नहीं किया..... गाँधी जी तो इस बात के सख्त खिलाफ हैं। वे तो मुसलमानों तक के घर में जाकर निःसंकोच भोजन कर लेते हैं। अछूतों को तो बराबर का दर्जा देते हैं। कुरीतियाँ समाज से दूर नहीं होंगी।"[9]

उपन्यास में संभ्रान्त प्रतिष्ठित और प्रशासनिक वर्ग के द्वारा आयोजित, अमन सभाओं को विरोध दलितों की 'मदारी–पासी' सभा के एका सम्मेलनों के द्वारा होता है। जहाँ समाज का दलित वर्ग स्वतंत्र हो अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाता है।

कालकथा में जहाँ स्वतंत्रता आंदोलन में सामान्य जनता का संघर्ष दृष्टिगोचर होता है वहीं दलितों का अपने देश की उच्च वर्ग और जातियों द्वारा शोषण अनेक दोहरे संघर्ष को उजागर करता है। कथा के दलित पुरूष पात्र 'हरिया' का यह कथन दलितों की विदुपतम परिस्थिति को बड़ी यथार्थता से रेखांकित करता है–"देश तो आजाद हवे जाई लाला, मुदा हम पंचन की आजादी कब मिली? हमार जिनगी का यही तना मालिकन के बेगार भरत कटी? हाड़ तोड़ मेहनत मिहनत करी

तबहूँ बात–बेबात मार खाई। बहू बिटियन की कउनौ इज्जत नाई तउन अलग। गोड़ाई, बोवाई, कटाई, ओसाई ते लइके हरहा गोरून की सेवा–टहल, बाग–बगइचन की रखवारी सब करी और बदले मां मिलै दुई मुठी मोट–झोंट नाज की भेली, दुई भेली गुड़ औ जो मालिक कइं रिसाय गे तो वहौ नाई।"[10]

इस प्रकार हम देखते हैं कामतानाथ 'कालकथा' के माध्यम से दलितों के उत्पीड़ित, दमित, शोषित जीवन की विद्रुप तस्वीर उजागर करने का सफल प्रयास करते है। कथानक में आंचलिक भाषा को अपनाकर वे विषय को अधिक सूक्ष्मता और वास्तविकता से प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास में उपस्थित हर पात्र तत्कालीन समाज का ऐसा ताना–बाना बुनता है कि समाज में व्याप्त बुराइयों, कुरूतियों और कुप्रथाओं जैसी तमाम समस्याओं को अपनी समग्रता में पाठक के सामने प्रस्तुत कर देता है। इनमें में भी दलित जीवन में व्याप्त समस्याऐं प्रमुखता से प्रकाशित करने में कथाकार सफल होता है। पाठक की संवेदनाऐं पात्रों से सीधे संवाद करती हैं क्योंकि उपन्यास के सभी पात्र वास्तविक जीवन से जुड़े खांटी पात्र हैं यहाँ कल्पना भी वास्तविकता में ढल गयी है। जो पाठक को वास्तविक जीवन से रूबरू कराती है। 'कालकथा' में दलितों की दयनीय स्थिति और जमींदारों की दोहरी रणनीति को उजागर करते हुए सुबोध कुमार श्रीवास्तव लिखते है– "द्वितीय महायुद्ध के बाद अंग्रेज सरकार ने देश के ताल्लुकेदारों के साथ मिलकर गरीब किसानों का जो शोषण किया था उसकी भयावह व निर्मम तस्वीर यहाँ देखी जा सकती है। समाज एक ओर यदि अंग्रेजों के अत्याचारो से पीड़ित था तो दूसरी ओर देशी ताल्लुकेदारों के शोषण का भी शिकार था। इस दुहरी मार ने ग्रामीण जनता को तहस–नहस कर डाला था।"[11]

अतः अंत में हम कह सकते हैं कि 'कालकथा' में लेखक ने एक वृहद कालखण्ड के विशाल परिदृश्य को बड़ी सूक्ष्मता से व्याख्यायित किया है। लेखक का उद्देश्य तत्कालीन समाज की राजनैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परिवेश की विवेचना कर समाज में व्याप्त दलित और सर्वहारा वर्ग की विकट जीवन परिस्थितियों को उजागर करना है। आज भी बहुत अंशों में छुआछूत, भेदभाव, शोषण, उत्पीड़न और अलगाव जैसी शाश्वत समस्याओं की मार झेलते दलित वर्ग के जीवन की कटुता को प्रकट करता हुआ यह उपन्यास प्रासंगिक है। दलितों के पक्ष में उनके अधिकारों और जीवन मूल्यों की लड़ाई लड़ता यह एक क्रांतिकारी उपन्यास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्रदीप उपाध्याय की कथाकार कामतानाथ से बातचीत : आजकल : जून,1999 : पृ0–18

2. दलित विमर्श और विवेकी राय की कहानियाँ : सम्पादक– डॉ0 नीलिमा शाह

3. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र : ले0 – ओमप्रकाश वाल्मीकि : पृ0–14

4. दलित राजनीति की समस्याएं : सं0–राजकिशोर : पृ0–46

5. कालकथा–1 : कामतानाथ : पृ0–270

6. वागर्ध : अप्रैल–2001 : सं0–कुसुमखैमानी : पृ0–111

7. कालकथा–1 कामतानाथ–पृ0–170

8. समय का समानांतर इतिहास और उपन्यास उत्तरप्रदेश : अंक–जून, 98 परमानन्द श्रीवास्तव : पृ0–44

9. कालकथा–1 : कामतानाथ : पृ0–170

10. कालकथा खण्ड–1 : कामतानाथ : पृ0–188

11. 'कालकथा' पढ़ने के बाद : वसुधा, अंक–45–46: सं0 कमला प्रसाद : पृ0–335